

वीररस पुं. (तत्.) काव्य. नौ रसों में से एक, जिसका स्थायी भाव 'उत्साह' है, इसके मुख्यतः चार भेद माने गए हैं, युद्धवीर, दानवीर, दयावीर और धर्मवीर, सामरिक भाव।

वीरललित पुं. (तत्.) वीरों के समान लेकिन साथ ही साथ कोमल स्वभाव।

वीरलोक पुं. (तत्.) वीरों का मार्ग, वीर मार्ग, स्वर्ग।

वीरवती स्त्री. (तत्.) वह स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित हों।

वीरवत् वि. (तत्.) शूरों से परिपूर्ण।

वीरवर पुं. (तत्.) उत्तम वीर, श्रेष्ठवीर काव्य. एक सम मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, सगण और लघु (न स ल) के योग से 7 वर्ण होते हैं, करहंस छंद।

वीरवर्य पुं. (तत्.) वीरों में प्रमुख, वीरोत्तम, उत्तमवीर।

वीरवर्णित वि. (तत्.) उत्तम वीर के उपयुक्त, महावीर के अनुरूप।

वीरव्रत पुं. (तत्.) 1. किसी कठिन और साहसिक व्रत या संकल्प को लेना 2. वीरोचित साधना की प्रतिज्ञा 3. दृढ़ संकल्प, दृढ़व्रत 4. नैष्ठिक ब्रह्मचारी 5. अपने व्रत पर अडिग रहने वाला व्यक्ति।

वीरव्रती पुं. (तत्.) जिसने वीरता का व्रत लिया हो, परमवीर उदा. 'वीर (बीर) व्रती तुम धीर अछोभा, गारी देत न पावहु शोभा' -तुलसीदास।

वीर-शैय्या स्त्री. (तत्.) 1. वीरों की शैय्या, वीरों के सोने का स्थान 2. युद्ध का मैदान, रणभूमि।

वीर-शैव पुं. (तत्.) एक विशिष्ट शैव संप्रदाय।

वीरसू वि. (तत्.) वीरों को उत्पन्न करने वाली।

वीरांतक वि. (तत्.) वीरों का अंत करने वाला, वीरों का विध्वंस करने वाला, वीरों को नष्ट करने वाला, वीरों का संहार करने वाला।

वीरा स्त्री. (तत्.) 1. वह स्त्री जिसके पति और पुत्र जीवित हों 2. मदिरा, शराब।

वीराचार पुं. (तत्.) तंत्र. वाममार्गियों की एक विशेष साधना पद्धति जिसमें मद्य, माँस आदि का सेवन और शव साधना शामिल है।

वीराचारी पुं. (तत्.) वाममार्गियों का एक भेद जो मद्यादि में देवताओं की कल्पना करते हैं, एक प्रकार के वाममार्गी जो वीर भाव से देवताओं की उपासना करते हैं।

वीरान वि. (फा.) वह (स्थान) जिसमें बस्ती या आबादी न हो, उजाड़, श्रीहीन, शोभाहीन।

वीराना पुं. (फा.) उजाड़ जगह, जंगल।

वीरानी स्त्री. (फा.) तबाही, बरबादी, वीरान हो जाने का भाव।

वीरासन पुं. (तत्.) 1. बैठने का एक विशेष आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार तांत्रिक अपनी साधना में करते हैं 2. घुटने मोड़कर ऐडियों पर बैठने का एक प्रकार का विशेष आसन 3. रणभूमि 4. वह स्थान जहाँ पहरेदार पहरा देता है, पहरा देने का स्थान।

वीरुध स्त्री. (तत्.) पौधा, लता, बेल, जड़ी-बूटी, झाड़ी अंकुर, डाली, एक पौधा जो काटने पर ही बढ़ता है।

वीरेंद्र पुं. (तत्.) वीरों का प्रधान, बहुत बड़ा वीर।

वीरेश पुं. (तत्.) 1. महादेव, शिव, 2. बहुत बड़ा योद्धा, वीरो का प्रधान।

वीरेश्वर पुं. (तत्.) दे. वीरेश।

वीर्य पुं. (तत्.) 1. प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार शरीर की सात धातुओं में से एक जिसके कारण शरीर में बल और कांति आती है 2. चमक, आभा 3. शुक्र 4. रेत 5. बीज, बीआ 6. शूरवीरता, बहादुरी 7. अचूकता, क्षमता, शक्ति पराक्रम, बल 8. रज 9. सामर्थ्य, ताकत, वीरता, पौरुष दृढ़ता, ऊर्जा, स्फूर्ति, पुंसत्व, साहस, मर्यादा आभा, कांति 10. गौरव, महिमा, महत्व 11. किसी पदार्थ का सार तत्त्व या सार जिसके कारण उस पदार्थ में शक्ति बनी रहती है।

वीर्यज पुं. (तत्.) पुत्र, वीर्य से उत्पन्न।